ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.2, April-June, 2025/50

ग्रामों से नगरों की ओर पलायन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (बिहार के वैशाली जिला के संदर्भ में)

कुमारी स्मिता सिन्हा,
sinhasmita111@gmail.com
https://doi.org/ 10.61410/had.v20i2.239

सारांश :–

ग्रामों से नगरों की ओर पलायन का क्रम कोई नयी स्थिति नहीं है। प्राचीन काल में भी गाँव से नौकरी, मजदूरी एवं जीवन यापन के लिए लोग गाँव से औद्योगिक शहरों में अपने जीवनयापन, परिवार के पालन पोषण के लिए जाते रहे हैं। मूलतः ग्रामीण प्रकृति पर निर्भर जीवन यापन करते थे। प्रत्यक्ष प्रकृति के सम्पर्क में प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं पर आधारित थे। कृषि ही जीवन यापन का मुख्य श्रोत था। कृषि भी पूर्णरूपेण प्रकृति पर निर्भर थी। पूर्व काल में जमींदारी प्रथा थी। जमीन पर जमींदारों का अधिकार था। गाँव के अधिकतर लोग या तो कृषक या कृषक मजदूर थे। जीवन यापन का मुख्य श्रोत कृषि यानि अनाज का उत्पादन था। जिसमें गाँव के भूमिहीन लोग कृषि श्रमिक के रूप में मजदूरी कर परिवार का भरण पोषण करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त जातिगत, परम्परागत पेशों पर आधारित अर्थव्यवस्था जैसे लोहा का औजार बनाना लुहार का काम था। इसी प्रकार लकड़ी का काम बढ़ई, सोना का आभूषण बनाना सुनार का काम, बाल बनाना नाई/हजाम तथा अन्यान्य कार्यों का विभाजन जातिगत था। इसके अतिरिक्त पशुपालन, टोकड़ी बनाना, हस्तशिल्प कला, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग से जीवन यापन करता था; यही आर्थिक श्रोत था। ग्रामवासियों का निवर्हन इन कार्यों के नहीं होने के कारण उन्हें परिवार के सुदृढ़ संचालन हेतु आर्थिक प्रबंधन में कठिनाईयाँ हुई जिसकी भरपाई के लिए ग्रामों से बाहर नगरों की ओर पलायन करना पड़ा।

कुंजीभूत शब्द : पलायन, कृषक, अर्थव्यवस्था, भूमिहीन, आर्थिक प्रबंधन इत्यादि

भारत गाँवों का देश है। आज भी भारत के गाँवों में 2011 के जनगणना के अनुसार लगभग 73 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। महात्मा गाँधी कहा करते थे कि असली भारत गाँवों में बसता है। गाँधी जी के समय सचमुच भारत की अधिकतर आबादी गाँवों में रहती थी। पिछली सदी के आरम्भ में यानि 1901 के जनगणना के अनुसार लगभग 90 प्रतिशत आबादी गाँवों में और केवल 10 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रह रही थी, परन्तु 50 वर्षों के बाद 1951 के जनगणना के अनुसार काफी परिवर्तन पाया गया। ग्रामीण और शहरी आबादी का अनुपात 83 और 17 था जो 2011 की जनगणना तक लगभग 73 प्रतिशत दर्ज किया गया है।

ग्रामों से नगरों में पलायन के संदर्भ में हिन्दी के जाने माने कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने 1930 के दशक में लिखे उपन्यास 'गोदान' में गाँव छोड़कर शहर जाने की समस्या को दर्शाया था तो 1950 के दशक में विमल रॉय की प्रसिद्ध फिल्म 'दो बीघा जमीन' इसी समस्या पर आधारित थी। डेविड एम० हीर के अनुसार देशान्तरण या प्रवास या पलायन का अर्थ है अपने स्वाभाविक निवास को परिवर्तित कर देना। गाँव से शहर की ओर देशान्तरण यह विकास के परिणामस्वरूप होता है। यह शहर के खिंचाव

- गया, बिहार

तथा गाँव में कृषि कार्य सम्पन्न कर लेते हैं तो कार्य की तलाश में शहरों की ओर अर्थोपार्जन हेतु पलायन करते हैं। परन्तु फिर कृषि कार्य यानि फसल के कटाई के समय वापस आ जाते हैं।

मूलतः एक भौगोलिक इकाई से दूसरे क्षेत्र में स्थानिक रूप से गतिशीलता को प्रवास या पलायन कहा जाता है। इस तरह से प्रवास/पलायन सांस्कृतिक विसरण, सामाजिक एकीकरण एवं जनसंख्या के पूर्ण वितरण का आवश्यक उपकरण है जो न किसी एक इकाई को प्रभावित करता है बल्कि जहाँ से पलायन होता है और जहाँ के लिए पलायन होता है यानि 'गाँव से शहर' की ओर पलायन होता है। दोनों स्थान विविध तरीके से जनांककीय, सामाजिक व आर्थिक आदि तरीके से प्रभावित होते हैं। भारत में गाँवों से शहरों की ओर पलायन की प्रवृति अधिक है जिसका कारण नगरों में रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा तथा जीवनयापन की सुलभ स्थितियों ने गाँव से शहर की ओर पलायन को पश्रय मिला है। पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है। इस कारण गाँव के साथ–साथ शहरों में भी कई जनांककीय, सामाजिक व आर्थिक प्रभाव पड़े है।

पलायन से होने वाले सामाजिक परिणाम का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि शहरों में चारो ओर के गाँवों से आने वाली जनसंख्या के कारण क्षेत्रीय भाषा, सामाजिक रीति–रिवाज में परिवर्तन हुआ है। कई विद्वानों ने इस प्रकार के पलायन को भारत में शहरों का ग्रामीणीकरण की संज्ञा दी है और इसके सकारात्मक पहलुओं की ओर भी इंगित किया है कि नगरों में जाति आधारित उच्च व निम्न संस्तरणों में कमी आई है। साथ ही सामाजिक बंधनों की पकड़ में कमी आई है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि गाँवों से शहरों की ओर पलायन के कारण सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक के साथ–साथ सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन का क्रम क्रियाशील है।

अध्ययन का उद्देश्य :– प्रस्तुत अध्ययन मुजफ्फरपुर जिला के ग्राम से नगरों की ओर पलायन के कारण उत्पन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करना है। पलायन के कारण उत्पन्न समस्याएँ एवं समाधान के सम्बन्ध में पलायन करने वालों के विचारों को समझने का प्रयास किया जाएगा। प्राप्त जानकारियों के आधार पर सामाजिक संतुलन एवं उत्पन्न समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव रखे जायेंगे जो भारतीय ग्राम को राष्ट्र की सशक्त इकाई के रूप सुरक्षित रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

अध्ययन क्षेत्र :– समस्या का चुनाव तथा उद्देश्य को निर्धारित करने के बाद अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण किया गया है प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार के लिए वैशाली जिला का चयन किया गया है। वैशाली जिला के अन्तर्गत आने वाले प्रखण्ड क्रमशः लालगंज, सराय तथा गौराल जहाँ से प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक है; उन क्षेत्रों का अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया गया कि प्रवास के कौन–कौन से कारण है अर्थात् किन परिस्थितियों में यहाँ से प्रवास किया जाता है।

अध्ययन पद्धति :– प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं का चयन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति का उपयोग किया गया है। साथ ही अध्ययन के लिए साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया गया है। इसके लिए एक साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है। सर्वप्रथम चयनित किये गये प्रखण्डों के पंचायत से 100 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है जिनका परिचय इस प्रकार है :–

तालिका संख्या :– 1

आयु के आधार पर उत्तरदाता का परिचय

आयु	उत्तरदाता	प्रतिशत
18 – 28	18	18
28 – 38	22	22
38 – 48	30	30
48 – 58	20	20
58 से उपर	10	10
	————	————
	100	**100**

प्रस्तुत अध्ययन के लिए जिन उत्तरदाताओं का चयन किया गया उनसे कुछ तथ्यों का संकलन किया गया है जो इस प्रकार है :–

तालिका संख्या – 2

क्या आप मानते हैं कि अगर ग्राम में रोजगार की व्यवस्था हो जाए तो नगरों की ओर पलायन नहीं करेंगे ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	78	78
नहीं	22	22
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आप मानते हैं कि अगर ग्राम में रोजगार की व्यवस्था हो जाए तो नगरों की ओर पलायन नहीं करेंगे तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जबाव अपने असहमति में दिया है।

तालिका संख्या – 3

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि ग्राम से नगरों की ओर प्रवास ने ग्रामीण विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	100	100
नहीं	00	00
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आप इस बात से सहमत हैं कि ग्राम से नगरों की ओर प्रवास ने ग्रामीण विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है तो प्राप्त उत्तर

तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 4

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि नगरों का आर्थिक उत्पादन का केन्द्र होने के कारण भी पलायन की स्थिति में बढ़ोतरी हुई है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	69	69
नहीं	31	31
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आप इस बात से सहमत हैं कि नगरों का आर्थिक उत्पादन का केन्द्र होने के कारण भी पलायन की स्थिति में बढ़ोतरी हुई है तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 31 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें जानकारी नहीं हैं।

तालिका संख्या – 5

क्या आपको लगता है कि प्राकृतिक विपदा भी पलायन के लिए लोगों को मजबूर करते है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	69	69
नहीं	31	31
कुल संख्या	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आपको लगता है कि प्राकृतिक विपदा भी पलायन के लिए लोगों को मजबूर करते है तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 31 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके असहमति में अपना जबाव दिया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर जनसंख्या का पलायन अतिनगरीकरण का सबसे बड़ा कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों से इस जनसंख्या पलायन के पीछे कारण हैं – ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बेरोजगारी, अधिक जनसंख्या तथा दैनिक सुविधाओं का अभाव। चूँकि ग्रामीण क्षेत्र मुख्यतः कृषि आधारित होते हैं, वहाँ के स्थानीय लोगों को साल भर काम नहीं मिल पाता है। फलस्वरूप वे नगरों की ओर भागते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ बड़े परिवार मिलते हैं, जिससे उनके समक्ष आर्थिक संकट उत्पन्न होता है, वही दैनिक सुख–सुविधाओं या आवश्यकताओं की हमेशा कमी बनी रहती है। इन सब समस्याओं का निदान ग्रामीणों को नगरों में दीखते हैं तथा उन्हें रोजगार प्राप्ति

के साथ–साथ आवश्यक सुख–सुविधाएँ भी उपलब्ध हो जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या का पलायन अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है।

नगरों में ग्रामों से होने वाले प्रवासों की स्थिति के जो दुष्परिणाम सामने आए हैं, ये हैं – रिहायशी मकानों की कमी, गंदी बस्तियों का विकास, प्रशासनिक कठिनाईयाँ, नगरीय सुविधाओं की कमी, यातायात की समस्या, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं का अभाव, अपराधों में वृद्धि, प्रदूषण की समस्या, दुर्घटनाओं में वृद्धि, मनोरंजन स्थलों की कमी, कूड़ा–कर्कट विसर्जन समस्या, विद्युत समस्या, पेयजल समस्या, बेरोजगारी समस्या एवं सार्वजनिक क्षेत्र में अतिक्रमण की समस्या। यद्यपि समस्या का समाधान सरल नहीं है, फिर भी इन समस्याओं को दूर करके इनका समाधान किया जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुजफ्फरपुर जिला में प्रवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अत्यन्त ही दयनीय है। उनकी समस्याओं का अध्ययन करना उचित है क्योंकि स्वाधीनता के 60 वर्ष पूरे हो जाने के बावजूद भी इन प्रवासियों की समस्या अभी तक ज्यों की त्यों बनी हुई है। जैसा कि अध्ययन से स्पष्ट है अधिकांश प्रवासी भूमिहीन श्रमिक हैं, आज तक इनके पास न अपनी भूमि हैं, न रहने योग्य अच्छी आवास व्यवस्था है, न्यूनतम मजदूरी होने के कारण ऋणग्रस्तता की समस्या लगभग सभी में देखने को मिलती है। जिसके परिणामस्वरूप इनमें बाल मजदूर व प्रवास की समस्या अधिकाधिक मात्रा में देखने को मिलती है। बाढ़ व सूखा के कारण भी इन्हें कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके लिए विभिन्न योजनाओं का निर्माण प्रायः प्रतिवर्ष किया जाता है फिर भी इनकी समस्याओं में अभी तक कहीं से भी कोई सुधार नहीं देखा गया है। गाँव से शहरों की ओर पलायन कम करने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं :–

- ग्रामों में रोजगार की व्यवस्था हो।
- प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए उन्हें भरपूर सुविधायें दी जाए।
- ग्रामीण प्रवासियों के लिए सामाजिक सुरक्षा कानून भी बनायी जाए।
- स्वरोजगार को प्रोत्साहन मिले।

यदि उपरोक्त सुझावों पर अमल किया जाय तो ग्राम से शहरों की पलायन में कमी आयगी।

संदर्भ सूची :–

- अग्रवाल, अमित; भारत में ग्रामीण समाज, विवेक प्रकाशन, दिल्ली 2006.
- मोहन, अरविन्द; प्रवासी मजदूरों की पीड़ा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998.
- मिश्रा, आनन्द प्रकाश; ग्रामीण निर्धनता, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 1999
- शर्मा, जी० एल०; सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2015
- सिंह, कटार; ग्रामीण विकास : सिद्धान्त, नीतियाँ एवं प्रबन्ध, अनुवादक यतीन्द्र सिंह सिसोदिया, रावत पब्लिकेशन, जयपुर 2011.
- सिंह, बी० एन०; ग्रामीण समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2013.
- कुरूक्षेत्र (विभिन्न महीनों के अंक), सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.
- योजना (विभिन्न महीनों के अंक), सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.